पू. गुरुदेव के साथ २४ बार गायत्री मंत्र २४००० गायत्री मंत्र के बराबर शक्तिशाली हैं

परम पूज्य गुरुदेव स्वयं कहते हैं—''हमारे साथ २४ गायत्री मंत्र बोलने से आप लोगों को गायत्री मंत्र का शुद्ध उच्चारण आ जाएगा और आप लोगों के बोलने के साथ-साथ में हमारी वाणी का भी समावेश हो जाएगा। हमारी कई वाणियाँ हैं। आपके तो एक ही वाणी है—बैखरी। हमारे पास मध्यमा वाणी भी है, परावाणी भी है, पश्यन्ति वाणी भी है। इन चारों वाणियों को मिलाकर के हम मंत्र बोलते हैं, तो २४ मंत्र हम बोलेंगे, हमारे साथ-साथ आप भी बोलना शुरू कर दीजिए। इस तरीके से २४ मंत्र समझिए कि २४ हजार मंत्रों के बराबर शक्तिशाली होंगे, क्योंकि उसमें हमारी वाणी का समावेश है।'' —यज्ञ की महत्ता एवं वातावरण का परिशोधन, प्रवचन से।

परम पूज्य गुरुदेव प्रातःकालीन साधना के निर्देशों में बोलते हैं—''गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बारह बार बोलें।'' जब हम गायत्री मंत्र का उच्चारण उनके साथ करते हैं तो प्रत्येक मंत्र के साथ हमें एक हजार मंत्रों के बराबर लाभ मिल जाता है। यदि नित्य बारह हजार मंत्रों का पुण्य लाभ लेना हो तो अपनी चेतना को उन ब्रह्मर्षि के साथ एकाकार कर जप करना चाहिए; जिनने उस मंत्र को सिद्ध कर स्वयं को गायत्रीमय बना लिया। —अखण्ड ज्योति जुलाई-२००८, पृष्ठ ६ से।